

Dr. Sumit K. Sharma

Assistant Professor (Guest)

Dept. of Psychology

D.B. College Jamnagar

L.N.M.U. Warbhanga

Study material

Paper-

B.A. Part-II (H)

Paper-IV

Date - 16-10-20

So - Next class.

Neo-Freudians

Contribution of Karen Horney

(i) स्नायुविकृत आवश्यकताएँ तथा स्नायुविकृत प्रवृत्तियाँ (Neurotic needs and neurotic trends) - जिन

व्यक्ति अपनी जिंदगी की बहुत सारी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाता है जिसके कारण उसे बार-बार असफलता ही हाथ लगती है तो उसमें कुछ विशेष आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इन आवश्यकताओं को हार्नी ने

स्नायुविकृत आवश्यकता (neurotic needs) कहा है क्योंकि इनसे कोई सकारण समाधान (rational solution) होता नहीं है।

ऐसी आवश्यकताएँ सामान्य एवं मनःस्नायुविकृत (psychoneurotic) दोनों ही तरह के लोग में उत्पन्न होती हैं। हार्नी ने इस बात पर बल डाला है कि मनःस्नायुविकृत प्रवृत्तियाँ (psychoneurotic trends) की उत्पत्ति अहं (ego), उपाहं (envy) तथा पराहं (super ego) के बीच संघर्ष से नहीं होगी है (जैसा कि फ्रायड ने कहा था) बल्कि व्यक्ति तथा उसके वातावरण के बीच संघर्ष (conflict) होने से उत्पन्न होगा है। हार्नी ने यह भी स्पष्ट किया है कि एक स्नायुविकृत व्यक्ति हमेशा निम्नोक्ति

दिन दिशाओं में से किसी एक दिशा में अवश्य ही अपने भाव को ले जाता है -

(i) व्यक्ति की ओर झुकने की प्रवृत्ति (Moving away people) - इस तरह की स्नायुविकृत प्रवृत्ति में व्यक्ति में अतिअनुपालनशीलता (over-compliance) का गुण पाया जाता है। व्यक्ति दूसरों का स्नेह, स्वीकार

तथा अनुमोदन प्राप्त करने के लिए उनकी प्रत्येक इच्छा के अनुकूल कार्य करने के लिए तैयार है।

(ii) व्यक्तियों के पिटहू होने की प्रवृत्ति (Moving toward people) - इस तरह की प्रवृत्ति में व्यक्ति में दूसरों के प्रति आक्रमण (aggression) की

शुन पाया जाता है।

(10). प्याकीशो से डूर ह्ये की प्रवृत्ति (Moralis vyaangsh peval) - इन प्रवृत्ति में प्याकी में दूसरों का सामना नहीं करना चाहता है और उसे डूर ह्ये की कोशिश करता है। इसे लीबो से मिठना - पुलना अच्छा नहीं लगता है और वह एकान प्रिय हो जाता है।

(11). पिना को कम करने का उपाय (Mental vyaangsh) - हानी का मत था कि मूल दुर्बिना (Mental vyaangsh) से प्रत्येक प्याकी छुट्टा पाने के लिए कुछ उपायों को अपनाना है। ऐसे उपायों को निम्नांकित दो भागों में बाँटा गया है -

(i). आदर्शवादी आत्म - छवि (Idealistic self-image) - हानी के अनुसार मूल दुर्बिना के डूर करने का रण्याल से अपने आप के बारे में प्याकी एक आदर्शवादी छवि विकसित कर लेता है जिसमें वह अपने आप को सही तरह के अम धुणों से युक्त मानता है। यह आदर्शवादी छवि प्रायः अवास्तविक एवं अतिरंजित (exaggerated) होता है। अपने आदर्शवादी आत्म को समर्थन प्रदान करने के लिए प्याकी धर्मो हो जाता है। जिसमें वह अपने आप में कुछ ऐसी विशेष शक्ति जैसे बुद्धि, बल या धन प्राप्त कर लेने की बात सोच रखता है जो अन्य किसी में नहीं होता है।

(ii). रक्षा उक्रम (Defence mechanism) - हानी का मत है कि प्याकी मूल दुर्बिना को डूर करने के लिए कुछ रक्षा उक्रम अपना लेता है। इनके अनुसार ऐसे रक्षा उक्रम दो प्रकार के होते हैं - योकिनीकरण (Rationalization) तथा बाह्यता (Externalization) है। प्रायः दोषारोपण में वह अपने सै कमजोर तत्वों को ही निशाना बनाता है। डेलमैन (Kellomaki) के अनुसार हानी का दुष्टिकोण मूलप्रवृत्ति (instinctive) न होकर संज्ञीरावादी (egoistic) था। इन अवलोकियों के बावजूद कुछ मनोविज्ञानिक ने हानी के योगदानों की आलोचना किया है जिसमें निम्नांकित बिंदु महत्वपूर्ण हैं -

(i). लुडिन (Ludin 1985) ने यह मत जाहिर किया है कि यद्यपि हानी के क्रायड ने योगदानों को कुछ विशेष कारक जोड़कर उत्पन्न बनाने की कोशिश की है।

(ii) इन वैज्ञानिकों का मत है कि हानी का मूलतः पिना (Mental vyaangsh) सनायु विकृत आवरण (Newborn's self) तथा सनायु विकृत प्रवृत्तियों (Newborn's self) के अध्ययन से ही अपने आप को सीमित (जो है) इन आतापानाओं के बावजूद हानी के योगदानों को मनोविज्ञान के उचित रूप में प्राथमिकता दी गई है।

Next class